विषयसर्वी

	विषय	40
;	मण्जानरण तथा हारों के न'म	*
•	न्यागर के प्यन्तदार, भेड़)११	
Ę	षानकारी मे-१ नामद्वार ओर५ प्राव्हार्यक्षार	Ę
ć	७ नयो के लक्षण	يد ق
,	नैगम चोर सगर नय का स्वरूप	¥,
تر	यद्रारसमुम्द आर एक नय का स्वरूप	5 — 5
	समभिस्ट और एवभृत का स्वस्ए	5-55
~	लक्षरद्वार	₹ ; =
	नेगमनय के भेड	ξξ—ξ,
	समर नय के भव	६५—३३
-	्यवरार तय के भेद	ξξ =0
	क्रमुसन नय के भेड़	: c —= : ;
	राज्य सप्तमिस्य और एव मृतनपना वन एक भेद	÷,
	नैगमनय के तीन भेद	= =
-	सगह नय के तीन भेद	٠
	व्यवरार और ऋतुस्त्र नय के दा दी भीउ	६ ६
	्राष्ट्र समिमिर इ पोर ग्व नृत नय का एक एक प्रा	
	सात नयो के पायली वसर्वा कार प्रदेश क हता	
۶ ۶	जीव धन सिद्ध समायिश और बाट पर	
	सात न्ये का सदलार (उतारना)	इंदे-६०
	इत्याधिक क्षोर पय याधिक तय क्षेत्र	8083
	सात भन्न हार	82-80
44	सात नये के ७०८ भेड	ر ، ک ر



मात नयों का घोकडा

वीरं प्रणम्य सर्वतः, गौतम गणिनं तथा । नयानां क्रियते व्याल्या,स्वास्मानुष्रहहेत्वे ॥६॥

श्राक्रम्योगहार त्त्र में सात नयों का अधिकार बहा हे वर इक्षेस दार कर के अनेक स्थल में बणिन हे इस अधिकार को करने हे—

स्ट डारो है नाम

१ तयशार, १ तिसेवशार, ३ द्रव्यगुणवर्षाय, १ द्रव्यक्षेत्रकालभाव, १ द्रव्यभाव, ६ कारणकार्य, १ तिश्वयव्यवशार, य श्वारात तथा तिनिनकारण, १ प्रमाण १, १० गुणगुणा ११ सामान्यविशेष, ११ हेयहानहाती १३ उत्यादव्ययष्ट्व १४ साधारा-धेय, १२ झाविभावितिरोभाव, १६ सुरुपना और नीणता.१७ उत्समीपवाद. १८ मातमा ३, १९ ध्यान४, २० मनुपोग ४,२१ जागरणा ३ ।

प्रथम नयपार के अन्तर्धार (भेद) ११.

१ नामवार, २ शाउद्याविवार, ३ स्वस्तपद्वार, ४ लक्ष गादार, ४ भेदवार, ६ द्रष्टास्तवार, ७ नयावतारवार, ४ दश्याधिकपर्यापाविकवार, १ समस्तीद्वार, १० सात नयां के १०० भेद दार ११ निश्चपत्यवद्वारवार ।

अन्तर्वामं मे—१ नाम हार.

वात सहत्वा १ नाम कहते हैं - १ नैगम्स्य, २ स्टब्स्ट्रेय ३ ज्वाहारमय, ४ ऋतुस्त्रहरूप ५ जाल. जब १ स्टब्स्ट्रेट्रेय ५ यवंस्ट्रेस्य ।

ः शस्त्रार्थन्तर

त्राय नय दा त हा अव लिखने ह जो वात् क रूपण यदा हा जान कराने वा ठा हा दा हा प्रमाण कब्द ह रूपवा ता रूपान पात् हा परिल्डा पाने क्या २ कह रूपव जिलाह सार विश्वपाने वित्रवात् का जैसी की तसी स्थापना करे वही प्रमाण कहा जाता ह, उस प्रमाण के दो भेद है—मिविकलप और निविकलप। जा हिन्द्रियहारा प्रवक्तने वाले मिति श्रुत ध्यविष मना-पर्यय ज्ञान स्वरूप हो वह स्यविकलप है जो हिन्द्रि-प्रातीत केवलज्ञान रूप हा वह निविकलप है। इस प्रकार प्रमाण के व्यर्थ जानना। और जा इसी प्रमाण के द्वारा गृहीत (यहणा की हुई) वस्तु के एक अंदा का ज्ञान कराने वाला हा उस का नय कहते है। व्यथवाजाता (जानने वाले) का जा अभिष्राय है वहीं नय कहा जाता है आर नाना स्वभाव से लेकर वस्तु का एक स्वभाव में स्थापित कर उसका तथा वस्तु के एक देश को जानने वाले ज्ञान का नय बहते है।

नगा 🕈 'जगा

जा विकल्प से समुक्त हा वह नंगमनम १। जो च्यभेदरूप से वस्तु को ग्रहण करे वह संग्रहनम २। जो

१ इसक अन्य स्थल में एस भी लक्षण कहे हैं, जैसे एक बचन में एक भाववसाय उपयाग में यह गा भाव उस का सामान्य कप पन सब बस्त का महणा कर वह समह नय, भ्रथवा सब भेड़ों को सामान्य पने प्रहणा कर वह संपहनय, भ्रयवा 'समृद्राव क्रयं पहणा कर वह सपहनय कहा जाता है।

इस (संग्रह) नय से जिस जिस अर्थ को ग्रहण किये घन्हीं स्थों के भेद करके वस्तु का फैलाव करे वह घ्यवहार नय ३। जो सरल भांति स्वचना करे वह कर्तुः घ्यवन्य ४। जो घाव्द व्याकरण से प्रकृतिप्रत्यय हारा सिद्ध हो यह घाव्दनय ७। जो घाव्द में भेद होते हुण भी अर्थ का भेद नहीं हो जैसे- बाक इन्द्र पुरस्य मादि, वह समिस्टिक नय १। जोर जो किया के प्रयान परे से हो यह एवंभव नय ७ कहा जाता है।

३ स्प्रापदार

स्वार नय बाला पडाये को सामान्य मानता है विरोध नदी, तीन काल की यान मानता है, निक्षेपा चार मानता है, सपह रूपर में बन्तु को पहण करें, इस पर डातन का इलान्त, लैसे किसी साहकार ने अपने अनुवर , डास) का कहा कि दानुन लाओ, नषबर रास 'डानुन "सा शब्द सुनकर डानुन मसी पन्त-मञ्जन क्या कियो जारी काच कांगसा रूमाल पाग पोशाक अनकार इत्यादि डानुन की सब सामग्री ले आया । इस प्रकार सपर नय बाला एक शब्द में स्रोक बस्तु को पहण करें लैसे बन को बन कहें परन्तु वन में बरनुष क्यों के

> 2) -2-1 - 2-7

भगवणार नय वाला परार्थ को विशेषस्तित सामा-स्य मानता है, तीन काल की बात मानता है, निक्षेषा चार मानता है, तथा जो वस्तु का विवेचन करे अथीत् भेद करें उस की स्पवहार कर्ने हैं कैसे-जीव के दो

नट पोलती है कि मेरे समरेजी पंसारी बाजार में संठ मिरन निगेरे सरीदने को गये हैं, तब उस पुरुष ने पंसारी बाजार में जाकर सेठजी की तलाम की मगर तरों नरी पाये तो पीछा आकर किर प्तता है कि नाई! वर्षा तो सेठजी नहीं मिल सब बनाइये कि में पति करां गये है ? तय यह गोलती है कि मेरे सम-रेजा माता के पदां जते सरीदने को गये हैं, तम वस परवान मालिपा के बाजार में जाकर तलाम की तो वर्गना मेरतानहीं पाये तय पीजा वहाँ फाया ना इनते स संदर्भ की सामाधिक पूरी हो गई भी, रार सामाधिक पारकर तम प्रति मा मिळ जीत यात नात कर उस का भाग दा और कि की बहुसी + १४ १० १२ वर् १ त जाननी या १ मधाराजा मामा (१४) ४६४ वर्ष र ना कि.स्नारक उन वा अर क्या याळा? वय व्यवस्व माना अवस्थित हि आप का धन इस र यय मन्तर के महा भवा भावा के गण गया भा कुल्या के प्रवास कर कर कर में प्रवास कर । उस प्रवास 2 कर अपना मा मानाम काल का भागा गा कर و المردان و الرو

राउड नार वाला पडाधे को सामान्य नहीं मानता है विरोध मानता है, वलेमान काल की बात मानता है, निषेद (माच मानता है, सहशा शब्दों काएक ही अबे मानता है, लिए और शब्द में भेड नहीं मानता है लैसे शक प्रस्टर शबीपति देवेन्द्र, सम को एक मानता है

समित्रत नय वाला पत्ताये को सामान्य नहीं मानना न विरोध मानना न विनेमान काल की यान मानना ने निश्चेर । भाव मानना है, महश शब्दों का मित भित कार्य मानना है, लिह और शब्द में भेद मानना ने जैसे राज्ञात जब शज्ञासन पर देश हुआ कारनी शिल जारा देवनात्रा को आजा मनाना है इस बखन वन शज्ञात है। पुरन्तर जब बज्जनाय में लेकर वैधि देवनाओं के पुरन्तर जब बज्जनाय में बखन वन पर नद है। शबीरिन- जब इन्हांगियों की सभा में वैठाहुआ रग राग नाटक नेटक देगे इति पजन्य सुर्गों का अनुभव करे उस तयान तह शती। पति है। देवेन्द्र-जय देवताओं की सभा में गैठा हुआ न्याय (उन्माफ) करे उस सभय तह देवेन्द्रहै। वंशे सम्मिन्द्रन्यवाला शब्द पर सामल होकर सरश अधीं का भिय भिय अने गरण करता है। अथवा किथिद उन परतु का भी गेंपुण परतु भारता है, जैसे नेटहेंब सारव राण पणायाल केवला नगवान का भी मिद धारव है।

िया करे उसी को यो वस्तु करता है, कैसे वाती से भग हत्या भी के शिराम जनारममूमय नेष्ठा करता हत्या हो उसी समय उस को पर (पड़ा) करता है किन्तु पर के रोते से यहे हुए पर को पर तही सानता है, एसे राज्य जाद समझी का अयका के सुक्तिअंत्र से विराजसात हो तर हो उस को सिड करता है।

२ तन्भणवार

णेगेन् साणेन् परानि णेगमस्य व निर्मा । मेस्राण्य तथाण् लकावणियमां मुण्य वोस्य । १॥ मगरिस्य देश्याः स्वत्यवणसम्मस्सं, विनि । दबह विणिन्ययमा ववरागं स्ववस्त्रेम् । २॥ श्रृष्यत्याण्य वस्त्रम् एप विर्म्मण्यव्यो । दन्मा विसे मियमा प्रमुख्याण्यां सदी ३॥ वस्त्रम्यां सम्मण, नेह स्वत्य्यं स्मामस्तिर्दे । वस्त्यां सम्मण, नेह स्वत्यं सा सम्भिर्दे । वस्त्यां सम्मण, नहस्य प्रमुख्य विसेसेह । ४॥

१ नैगम नय सामान्य विशेष तथा उभय प्रधान बातु को मानता है । २ सग्रतनय सामान्य प्रधान बन्तु । को मानता है यथा सन् जगन्। ३ व्यवहारनय विदेष

५ भेट टार

स्राप्तता के दान आहे हैं आहे. आहे आहे। स्रोप स्रोप संस्कृत स्थार िलेगादल्यन में नीवा उपनित्ति भेड़ आहे करा न

सन नेग्रह ने शहर ने भितास स्रोर स्विभिः तास राम से स्वरण रिक के तुरे असा को भितांश कर्म न ए , र अरिभागतुर का वाभितास करने हैं।

इपपेक्षा कारण में ज्यादान कारण का आरोप करना जैसे मुनि के पात्रादि उपकरण को चारित्र (संघम) का इपाधार कहना, इसी का नाम कारणारोप है।

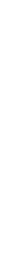
संकलप नैगम के दो भेद होते हैं - स्वयंपरिणामसप और कार्यस्य । स्वयंपरिणामसप जो वीर्य चेतना का सकलप होना इस जगह जुदा र क्षय ज्यौर उप-शम भाव हना है दसरा कार्यस्य - जैसार कार्य हो वैसार उपयोगहो, जैसे मिट्टा का करवा बना उस समय करवे का उपयोग ज्योर उक्तनी बनी उस समय हकती का उपयोग !

(स्थार नय)

सम्रह नय के दां भेद है-सामान्यसंग्रह और विशेषसंग्रह। सामान्यसग्रह के भी दो भेद है-मृलसा-मान्यसंग्रह और उत्तरसामान्यसंग्रह। मृलसामान्य-संग्रह के अस्तिन्य १ वस्तुन्य २ ह्रव्यत्य ३ प्रमेयत्य ४ प्रदे-शत्य ५ और अगुरलधुन्य ६. ये ह्रह भेद हे और उत्त-रसामान्यसग्रह के दो भेद है-नातिसामान्य और समु-दायसामान्य। जातिसामान्य जो एक जातिमान्न को ग्रहण करे। समुदायसामान्य-जो समुदाय अर्थात्

पदार । पहले रेड १। अधे यह है कि- स्व याने अपनी ज्ञानमा जा नाय याने ज्ञान दर्शन चारित्र बीर्य न्यारि अनन्त्रमण न्यानन्द्रमय है, मेरा कोई नहीं फोर में किसा का नती हैं, ऐसा तो व्यपने स्वरूप की जानना उस का नाम (वयस्तरगत्न जानन व्यवहार ै 🕒 इसरा भर परस्तुगतनस्वजाननस्यवहार ्डस दे । व्याप्त हा ना ना पर ही **सेंद है न्योर** किसा अपेक्षा से चए चयवा पाच भेद भी हो सकते है. इन सब को एक साथ दिखाने हैं, जै**से धर्मातिकाय** में रजन-महाण जाहि गण (हास्या) हैं और व्यवमीरिवसाय में हिस सहाय आदि गुण है, आकाश में अपगारनाद गुण है, पुरुष में मिलन विखरन चादि गुण ओर काल राजया प्राना वर्त्तनादि गुण हा, इत्यान्डकः । इस स्वय परवस्त्रगततस्य को जानना इस का नाम परवरत्यनतस्वजाननव्यवहार है।

अन्य प्रकार से भारस दानुगन व्यवहार के तीन भेद हाते हा सा भारास ते हिन १ हव्यव्यवहार शुग्राव्यवहार ओर हे स्वभादव्यवहार । हायव्यवहार उस का कहते हा कि जनत् के जा इव्य (पदार्थ) हैं उन को यथार्थ जाते. हम हव्य त्यवहार के कहने से बौद्धादि मन का निशकरण हाना है। दूसरे गुणव्यवहार



गांध कराता, हैमें किसा को हात गुरा हैकर हाती कर्ता, इलेन में इलेना और चान्ति में चान्ति। इन्हाडि

यहाउत्पवनार के भारा भेर हन (सकेषित यहाउ न्यवनार आग यहां पित अहाद्धन्यवहार। सकेषित यहार न्यवनार एस का कन्ते हे जो यह हाना मेरा हे योर में सारा का ने एसा कहना। असके षित अहाद न्यवनार उस को कन्ते हे जो असाहि चेरा है। एसा कर्ता।

इस उपशुद्ध प्यवतार का अन्य प्रकार से भी पेद तोने हे सो तस प्रकार – इस के मुख्य दो छेद हे-विदेवनस्य ज्याहुद्ध व्यवतार जोग प्रकृतिस्य अशुद्ध व्यवतार विदेवनस्य सशुद्ध व्यवतार मो अनेक प्रकार वा है। इसरा जो प्रयुत्तिस्य ब्रह्मुद्ध व्यवतार हे इस के तीन भेट हे वस्तुप्रवृत्ति। साधन-अवृत्ति और लेकिकप्रवृत्ति। इन में भी साधनप्रवृत्ति के तीन भेट हे-जोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति। क्षप्राववित्ति साधनप्रवृत्ति और लोकव्यवतार साधनप्रवृत्ति। लोको-नरशावनप्रवृत्ति और लोकव्यवतार साधनप्रवृत्ति। लोको-नरशावनप्रवृत्ति और लोकव्यवतार साधनप्रवृत्ति। लोको-नरशावनप्रवृत्ति और लोकव्यवतार साधनप्रवृत्ति। लोको-नरशावनप्रवृत्ति और लोकव्यवतार साधनप्रवृत्ति। लोको-समाग में तत्वोक ससार पृष्टक भोग आहसावि तोष रहित लो रक्षवयों की परिणित परभाव त्याग सहित है। क्रवापनिकि मान्य वानि-जो स्थाया है विना मि पालिनियेण पतिन पायनप्रतिन है। उक्त न्यवरार स्थानप्रति जा तोक के-अपने स्थाने नेज स्थोर क्रव का स्थिति वे ज्यसमार प्रतिन करना।

भाष्ये प्रकार संचारस भागा प्राप्त नगरासके गार चर राजे र जाभागव पर, मणचारवचार, प्रवासि चन्यवरात्र यात्र यात्याति यवरात्। जासन्यवहात रत रहत है। संपाल का किया करें। प्रजासन्य रत देते करा र जा पाप का किया की । उपप्रित अवसर उस का करता र अपनादि पायस्य है उन भारतस्य भ्रम् । सर्वास्तिन वालार ।मेर कडने र स इंटर प्रारितरम् । व स्वितित्रव नगरे जार करीक हर यह तथा विभागित का र में आयो समाय रहर कि रहर रहर भारत्य मात्रामा मेर ताम मा

कर का अवस्था के अपने का स्वर्ध स्थाप स

नहीं मानता है। स्थृलक्ष जस्त्रवाला पाछा प्रवृत्ति ध्यथवा कथना के कथनेवाले को जैसा देखता है वैसा हो मानता है।

णादः नेय)

शब्द नय के चार भेद है-नाम, स्थापना, द्रव्य स्रोर भाव। इन चार भेदों को ही जैनशास्त्र में निश्लेष कहते हैं।

(समिन्छः नय)

समिधिरुट नय का यह एक ही भेद है।

(८५म्त नव)

एवभृत नय का भी पूर्वोक्त केवल एक ही भेद है। खब खन्य प्रकार से भी नया के भेद कहते हैं—

१इसक खन्यिकान सात भद्र भी वहाहै, देशा तमचक देवचन्द्रजा तृत । २ रन सिक्षेष क विक्षेष विद्यास्य द्या भागम-स्रार नयाका द्रायत्मव तप्तः पादि । २ तम के अन्य ठिकाने जो भेर भो कहे है देखा नयचका देवचद्रजा हुत ।

(देगम नगः)

नैगमनप भन भानी त्योर वर्नमान काल के भेरे में नीन प्रकार का है-भन नैगम, भानी नैगम त्योर वर्ने मान नेगम। त्यानीत काल में वर्नमान काल का त्याराप करना पर भन नेगम है, जैसे तीपमालिका करिए करना कि त्याज और पद्धिमान स्वामी मोक्ष गए। आनी नेगम परो करने र जा भानी (स्विष्णा) कार ए भ्रकाल का आग्राप करना, नेसे और स्वि

ह त रव र सा विद्राची र, एसा कहना । पनिमान नेयय प्रकार के र ता प्रत्युक्त ने का बारम्स की यह कर हरे कर न हरे ता उस वस्तु का हरे करना नेयर अरुप (साम्य) प्रस्थान सा रचस्त्रुपकाने की

केवार कर कर का रायप कर कि चादन पकार्त है।

हार का इन्ना स्था तहर साधानात्तवर सीर हाल्य हायर कावान्यकार कर राज्य वास्त्रा हार का दार सम्बंधिक स्था दाय प्राप्त

 सप जीव चेतनम्बभाव द्वारा विरोधरहित है ऐसा कर्ना।

(व्यवहणन्य)

व्यवहारनय दो प्रकार का है-सामान्यसंग्रहभेद-क व्यवहार और विशेषमंग्रहभेदकव्यवहार । सा-मान्यसंग्रहभेदकव्यवहार- जैसे जो द्रव्य है सो जीव ध्यजीव स्वरूपी है ऐसा कहना । विशेष संग्रहभेदक-व्यवहार-जैसे जोव है सो संमारी भी है मुक्त भी है, ऐसा कहना ।

(क्तमूत्र सा ।

अञ्चल्ह नय के भी दो मेद है- सुक्ष्मऋजुस्ष्र स्मीर स्थूल ऋजुस्त्र । सुक्ष्म ऋजुस्त्र-जो सुक्ष्मपने बस्तु को सम्मह करे तथा जो एक समयावस्थाधी पर्धाय माने । स्थूलऋजुस्त्र- जो स्थूलपणे वस्तु को संमह करे, तथा मनुब्धादि पर्धाय को स्थलने न स्मायु: प्रमाग्य काल तक ठहरना माने ।

೯೯೦ ಕರು

शब्द नय एक प्रकार का है-जो शब्द के आरा हो वस्तु

को जाने जैसे-दारा, भाषी कलबं । ये बार्य अनेक है परस्य अर्थ एक ही है ।

(संविधान संविध

सम्मिम्य नग का भी एक भंद्र है जो जहाँ जैसी स्थापना कर के पस्य का दद करें जैसे सो पशु है !

(१)वन वय,

एक भाग नय का भा एक भव है जो जहाँ मार्थिक पर्ने के देव कर नाम ले तेने 'हन्दर्शनि इन्दर्श जो प्रस्य गरण कर देशा का नाम इन्द्र है।

६ त्यान्नगरः

नय के त्य निवाय से बोला कि में पायली होने को जाता हैं, क्षाप वृक्ष होडने हुए उस को देख कर किसी पुरुष में परा भा^ते क्या रेडना हो, नब वह विशुद्ध नैगम नग दे इस्तिप्राय से दोला कि भाई! **में पायली** हेदना है। अब बहाइक्ष काष्ट कर घर ला**या और** पहने लगा नव किसी ने पूजा कि भाई! नुक्या घहता हो नव वह विराद नैगम नय के समित्राय से बोला कि मे पापला पहना है। उस लक्कड को बीसणी से कोरने हा का देख कर किसी ने पूरा कि भाई! नु क्या कोरता हो,तय वह विश्व उत्तर नैगमनय के अभि-प्राप से बाला किस पापना कारता है। इस को लेखिना से समाने हण को देखकर किसी ने पूछा कि भाई' न क्या समारता है। तब दह अन्यन विश्वतर नेगम नय के उपित्राय से बोला कि मैं पायलों को समारता है। अप वह पायली संपूर्णतैयार हो गई और इस की पायला करना, यहां तक विशु-द्धनर नैगमनय का व्यक्तिप्राय है। व्यवहार नय का भी इसी तरह मानना है। तब सग्रहनय बालायोला कि आई ' जब इस से धान्य भरोगे तब यह पायली करी जायगी जन्यया यह काष्ट है। ऋजुस्त्र नयवाला

करता है कि जब पापनी में भारत भर हर एक दी तीन नार पांच हत्यादि शब्द कर के पान्य मापोसेत्व पापनी कही जायमी जन्मथा यह काछ है जार पर भारत है। तब शब्दादि तीन नव बाले बाले कि उस पापनी में यात्र्य भर के अब इपयोग महित एक ही हीन पार पांच हत्यादि शब्द का के मापोसे तब पापनी कहा पापणी करण्या पर काछ है पर शास्त्र है और नु इन सद बीप समुद्रों से रहना है निय वह विराद्धनर नैगम नय के काभियाय में जिला कि मैं मध्य जम्बूबीय में रहता है। नय वह नियण प्रस्य बोला कि भाई! मध्य जस्बर्हाय में तो इका सेब हैं तोक्यात इन दशों ही सेन्नां से रहता है। तब वह परुष बान्यन्त विश्वास्त नैगम नय के अभियाय से योगा कि में भरतक्षेत्र में रहता है। तब बर् निप्त प्रम्य बोला कि भाई। भर-नक्षेत्र नो डो 🖹 इक्षियाई भरत झौर उ**नरा**ई भान, नो ज्या न होनो नी क्षेत्रों से रहता है ? नव वह पुरुष सम्यन्त विराहतः। नैगम मय के अभिप्राय से बोटा कि से इक्षिणांद्व भाग क्षेत्र में रहना हूं। नज वह निर्ए एस्य बोला कि दक्षिणाई भरत क्षेत्र में नो याम, अगार नगर खेड, कब्बह महस्य द्वीण-मुख, पट्टा, झाश्रम,सवार, सनिवेश खादि बहुन से हे नो क्या नु इन सभी से रहता है । नाप वह पुरुष फिर कुछ अधिक विशुद्धतर नैगम नय के अभिप्राय से बोला कि मै पार्टलीएक नगर से रहता हूं। तब दह निवुण पुरुष बोला कि गदलीपुत्र नगर में तो बहुत

परिकरण देवतुर प्रसादा रवेद्याविकेट प्रश्निमसाविदेह **से**ब ।

तत तर प्रति किर किर जिल्लाकि विशापनर नैगम नप ने मिनाप से पाला कि में में प घर (कांट्रे) में र रता है। यहां तक ता विज्ञात्तर नेगम नग का चा निपास रे। तथा प्रस्तार नेस का नी चानियास इस्त प्रतारका ए। त्र अस्परित का निप्ता प्रविते क्य कि लार' संय पर (हाउ) मंता जगर गर्त रता ता स्था रिता र तिता स्थापन समार नग क क्रियाम संस्था कि सारे व अपनी शरता पर रस्य र । तर र तिपण स्थायाला कि साहै श्रेणा र वा रहर से सामाज राजा ने असाह है ती है कर रस्तार स्ववरतन्त्र सार्वनम् स्वि द र र र १ र दें के सामा व्यवसाय की तात औ + 5 . 15 COURT / MARIE 17 17 17 17 1 र विकास रिकार के स्वर्ण के स्वर्ण की सामि the terms of the number of of the

से घर हे तो तथा ते सभी घरों में रहता है? तयाह पूर्ण किर कुछ अधिक विज्ञ जतर नेगम तथ के सिश्याय से योला कि से देखन के घरमें रहता है, तक वक निष्ण पर्ण पाला कि देखन के पर में ता कोड़े प्रवाह ता क्या तु सभी कोठा में रहता है? रत्ता है ति वह शाहाहि नीन नया के व्यक्तिशाय में योला कि में अपने व्यानमन्द्रत्य में रहता है।

नैगम नय बाला इन बन्यों का प्रदेश कहता है लेखे । प्राप्तिकाय का प्रदेश, व्यथमीरितकाय का प्रदेश. आकालाविकाय का प्रदेश, जाद का प्रदेश, पहल-स्कार का प्रदेश देश का प्रदेश । तैसम नप वाले के रंपे कहते रुक्षा सपत सप बाला बोला कि जो नुसह दन्यों का प्रदेश कहता है सा हार सन्यों का प्रदेश नहीं होता है क्यों कि हैदा का हो प्रदेश ह वह उसी इध्य स्कार का व कित्न हुछा प्रदेश अलग नहीं है, इस पर रष्ट्राक्त करते र हैसे किया साहकार के दास ने खर (गर्डेस स्वादा नव वन साहकार कनना है कि दास भी भेरा चीर खर भा मेरा ह परन्त खर दास का मही करलाता है से इप्रान्त से बर इत्यों वा प्रदेश धन करो परत्य पाच हापा हा प्रदेश कही-

धर्मोरितकाप का घोजा, च रमोरितकाय का घोजा, जा कालाधितकाच का योज, नीच का प्रोश भार पर कर का परेश ! संघानय पाले के एसे पालने पर त्यवरार स्यवाना करता ते कि जो त्यांच का प्रेण करता र सर नरी राता त. किस कारणसे ⁹सी क^{रते र}न नेने पान विच विच हर (जाविज में) हाउँ 🛂 निस्त्र कहाया साना वर्ग व्याविता च हाया स्पर्यात्ति प्रवाचाका क्रियाला है। हमा सित सर्वका वर्षा करा स्थाना अद्वानी र कि २ १८५ (एटरपर एकप्टा सत्तात्राता हम्पापते २ २२९४९ । सर्वस्य प्रतृत्याच्यासारकारे ं रक्क गर्भ अस्ति। त्राम कावरत च । व्यक्तिकाण तः स्थानस्य स्थापन्तः । त्राचनाः वाद्याः । व्यापनाः । र १ र १ र १ १ जा । १२ महत्वम् वा १ १ महो करते रर्भर र प्रथम हि सन्पानपहार ्रें र १ १ वर्ष १ वर्ष १८ ११ वर्ष शहा शहा आहा वाल र र ४ के वे र र र ४ वे र १४ । ११ भी भी भी सी सी र म र ११ राज्यात १९ १ । १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ - entry to at a transfer and a flood water

२ स्थात् अभर्मास्तिकाय का प्रदेश, ३ स्थात् आका-शास्तिकाय का परेश, ४ स्यात् जीव का परेश, १ स्यात् पुटलस्कन्ध का प्रदेश। ऋजुसूच नम बाले के ऐसे षोलने पर शब्द नय वाला कहना हे कि जो नुं 'भइयव्वो 'भजनीय प्रदेश करता है सो नहीं होता है वयां कि भजनीय प्रदेश करने से एसी शङ्का प्राप्त रोती ह कि जो धर्मास्तिकाय का प्रदेश है वही स्थात अधर्मास्तिकाय का भी प्रदेश होता होगा, स्थात धाकाशास्तिकायका भी प्रदेश होता होगा,स्थात् जीव का भी प्रदेश होता होगा. स्थात पृझ्लस्कन्ध का भी प्रदेश होता होगा । इस रीति से जो अधर्मारित काय का प्रदेश है वही स्थान धमारिनकाय का भी प्रदेश होता होगा. स्पान आकाशास्त्रिकाय का भी प्रदेश होता होगा, स्पात् जीव का भी पदंश होना होगा स्पात् पुदृहरकस्ध का भी प्रदेश होता होगा। इसी तरह आकाशास्त्रिकाय का प्रदेश, जीव का प्रदेश ऋौर पुरुष्टस्कन्ध का प्रदेश को भी समभ हेना चाहिये। एसे (भड़नीय प्रदेश) करने से नो अनक्ष्या दोप की प्राप्ति होगी इसलिए भजनीय प्रदेश मन कहां किन्तु एसा वहां कि जो धर्मरूप इत्य का प्रदेश हे वहां धर्मप्रदेश ह जो अधः र्मरूप द्रव्य का प्रदेश हे वही अधर्म प्रदेश हैं. जो

प्रदेश है वही प्रदेश साराश इब्प है। जीव का जो प्रदेश है वह प्रदेश ओवड़न्य नहीं हे स्पीर पुड़लस्कन्ध का जो प्रदेश है वह प्रदेश पुड़लस्तम्य नहीं है। समिनिः हर नय बाले के एसे बोलने पर एवभून नय बाला कहना है कि जो जो धमास्तिकायादिक वस्तु तु कहना हे वह वह 'सबे' सद 'कुक्कन' देशप्रदेशकल्पनारहित, 'प्रतिषुर्ग : स्व स्वरूप से अभितः 'निरवदीष' अवयव-रहित, 'एकपहणग्रान को एकही नाम से पोलाजावे नतु अनेक नामा में, कारण कि नाम के भेद से वस्त में भेर की बार निहोड़ाड़ी है इस लिए धर्मानिः काषादि बस्त को सपने करो किन्तु देशपदेकादि हप है मन करों क्यों कि इंश भी मेरे मन में बह्त नहीं है और प्रदेश भी मेरे मन से दान नहीं है, सिर्फ अखग्रह बाहु का ही सन्व से उपयोग होता है ॥

७ नयावनार द्वार

प्रथम जीव के विषय में सात नय कहते हैं — नैग-मनय के मत से हुए प्योय और ग्रीर सहित सभी जीव है, इस नय ने ऐसे कहते हुए पुड़लद्रव्य धर्मा-श्तिकाय झाड़ि को भी जीव में गिनलिया। संग्रह नय कहता है कि झसख्यात प्रदेश वाला जीव है, इस्. मा

चय धर्म के विषय में सानो नयों को उतारते हैं-नैगमनय के मन में सब धर्म है क्यो कि सब कोई धर्म की इच्हा रखना है, इस नयने अंशस्य धर्म को भी धर्म नाम कहा है। संग्रह नय के मत से जो बरापरमपरा का भर्म है वहीं भर्म है, इस नय ने भनाचार को ह्याहकर क़लाचार को यहण किया है। व्यवहारनय के मन से जो सुख का कारण है बही धर्म है, इस नच ने पुण्य की करनी को ही धर्म कहा। अञ्चल्य नय के मन से उपयोगसहित वैराग्यपरि-णाम को धम कहते हैं.इस से यथाप्रवृत्तिकरगा का परि-णाम भी धर्म हो जाता है जो परिणाम मिध्यात्वी लोगों को भी होता है। शब्दनय के मत से समकित की प्राप्ति को ही धमें कहने हे क्यों कि धर्म का मुल समिकत है। समिमिहर नय के मत से जीव अजीवारि नव तत्वों को या दह द्रव्यों की जानकर अजीव का न्यांग करनेवाला ओर जीव-सत्ता को ध्यानेवाला जो ज्ञान दुईान चारित्र का परिणाम वही धर्म है, इस नय ने साधक और सिद्ध इन डांनों परि-गामां को धर्म से अई।कार किया । एवसन नय के मत से शक्कध्यान रूपानीन परिग्राम और श्रपकश्रेणि, ये जो कर्मक्षय के हेतु है वेरी धर्म हे क्यों कि जीव का मुल्यामात ही पर्न है, इस पर्न से ही मोलहर कार्य की मिद्धि होती है।

क्या सिक के निषय में सानों नयों की उतारते हैं

वैत्रम नव के मत से सत जीत सिद्ध है क्यों कि क्रा जान का भेजाता पायः भव जीवो में बहता है। ल्या माथा में एमा भी कहा है - आह समक्रमदेशाता मत्र जाग के गिए के परधाक समान प्रत्यन्त निर्मल कर रहत के उन मंजभी कता विज्ञतीलगणकती। संगत त्रपंक संवत्तां स्था तासा की सत्ता सिंद के समान है। इस समा प्रमाणातिक नय की कापदार भाइ कर द्वापा

िक तथ का अपन्ता का संभाकार किया है। व्यवहार अव के तर से अंत का एक। यता कर क्षेत्रामधिदिकर v. र., करतर रवस्ति वस्तार सामृत्य माना

🐷 🎍 कर रचया ३ वल स्र विद्याल सिंह की सीर

राद्ध उपयोग की एकायता से धर्म श्राक्त ध्यान हारा समिकनादि (सम्यक्ष्णविष्ठ) गुण को अकट करता हुआ मोहनाशक १२ वे गुणठायो क्षीयामोही होकर आत्म-सिद्धियों को प्राप्त करें वह सिद्ध हैं। इस नय ने क्षपक श्रेणि वाले को सिद्ध माना है। समिम्ब्ड नय के मन में जो केवलज्ञान केवल दर्शन आदि गुणों से विभूषित हैं वहीं सिद्ध हैं. इस नय ने १३ वे १४ वे गुणठाया में वर्तमान केवली भगवान को भी सिद्ध माना है। एवंभूत नय के मन से वहीं सिद्ध कहा जा सकता है जो अष्ट कमों का क्षय कर के लोक के अपमाग में विराज्मान धोर झाठों गुणों से युक्त है।

ध्यय समायिक पर सान नय उनारते हैं-

नैगम नय के मन से जय सामायिक करने का परिणाम हुइए। नय ही सामायिक माना जाता है। संग्रह नय के मन से सामायिक के उरकरण लेकर विनयपूर्वक गुरु के समीप जाकर विधिपूर्वक स्नासन बिकाना है उस बखन सामायिक कहा जाता है। हयबहार नय के मन से ''करेमि भते'' का पाठ उद्यारण कर साबद्य योग का त्याग पूर्वक प्रबक्खाण (प्रत्याख्यान) करे उस बखन सामायिक माना जाना पाण का नो कोई कस्र मही है बागा नो किसी पुरुष के हाथ से हुआ है इस वासते पाण के चलाने वालेका कस्र ह । नच नपबहार नय बाला बोला कि भाई! षाण मारने वाल का कोई कस्र नहीं हे परन्तु तुम्हारे चाराभ गतका जार है अधीत् चाराभ गतका कस्र है। तय फलुस्च नय वाला बोला कि भाई! ग्रह् का कोई कसूर नहीं ने क्यों कि यह तो सब ही सन मानदृष्टि वाले हिकिसा को भी दुख देने नहीं है परस्तु तुम्हारे वर्मो वा वस्र है। तब काद्यस्य बाला बोला कि भाई ' कमों का काई कसर नहीं है क्या कि कर्मनो जह (अवेनन' र. क्यों के करने वाले तो इयपने जीव हात. जिस परियास से क्स करते हैं वैसे ही पत भोगने न इसालेग त्रनारे जीव का ही कसर है। नव समिन्दर सप बाला पोला कि भाई! जीव का नो कोई कमर नर्श ह जैपा देवली भगवान, ने भाव देखा हो बैसा हा जीव का परिगाम होता है। तदत्सार कर्म करवाहे, यार दैना ही फल भोगताहै, इस को कोई टालने समय नहीं है इसलिए समभाव का अवलम्दन करना चानिय। नय पवभृत नय बाला योला कि ये सुलाइ लाउपि समयाया व्यवहार रूप प्रवृत्ति है, कमों का कता तथा भाक्ता कम ही है परन्तु

इन्प्राप्तः, ७ पामननपथिक, ८ शुद्रहत्यार्थिक, ६ सन इव्याधिक चौत े । पामभावयाण्क्यव्याधिक। ६ मिन्यहत्याधेक- हो सद हव्य को निन्धहर **से** स्वीकार करें। २ एकहरूपाधिक जो समुस्तबु स्रीर सेंज को स्वयं मान का के एक मलगुण को ही इक्झ याण करे : सरहत्वाचिक- मो ज्ञानादि ग्रंग से सब जीद समान रे इस जार सम्बो एक ही जीद कहता **हुआ** स्वार्य दि का राज्य करे हैं में "सहाध्या इन्यस्"। ५ बन्बरपहरूप थिक— जा इच्या से करने प्रोत्य द्वणाकी हो प्रत्य करे 👢 चरु ह्रद्दद्याधिक- जो स्मान्धा को सङ्गानी करें । अन्वयद्वयाधिक- जो सम द्रव्यो को गुरा और पदाद से दक्त सामे । ७ परमहत्वाधिक-हो 'सर हत्या का मल सना एक है । ऐहा करें। ८ ह्याइर्व्याधिक- तो प्रायेक तोव के द्वाठ रवक प्रदेशों को शुद्ध निर्भेग करें 🤏 हस्ताद्रव्याधिक- जी जोब के अस्टारत प्रदेश एक समान है। ऐसा माने। १० कामभावपार्क्डक्याधिक- हो छए और छपी एक इच्च है, आक्सा हान हर है। एसा माने।

पयोषाधिक सम के तर भेद होते हैं वे इस

१ पर्यक्ति । वह देह को है हर्ष देन-

मक्तर-१इडप के पर्याय को यरण करने पाला, अज्यात पर्याप नो स्वापक रायक पर्याय के उपभव पर्याय को स्वापक पर्याय के उपभव पर्याय को मानने पर्याय पर्याय पर्याय के लाले के लाले के । व मण्यपर्याय का मानने पर्याय पर्याय के लाले के उपकार राजा मण्यपर्याय के लेखे प्रमाय के एक गति करण्यकता गण के मलेक पर्याय काम प्रमाय का भाग के प्राय का प्रमाय का भाग के प्राय के प्रमाय का प्रमाय के लाले के लाल

४ अश्व ह अतिरणपर्याप तिमे जीद-इन्य के जनम और मरण । ५ उपाधिपर्याय-जिसे जीव के साथ कमें का सम्पर्य । ६ शुद्धपर्याय-जेसे मृंलपर्याय सब दन्यों का एकस्परान है ।

व्यव इसरी तरह से भी इत्याधिक के १० भेट श्रीर पर्यायाध्य के अभेड कहते है जिस में द्रव्या-र्थिक के १० भेद इस प्रकार-१ वर्मोपाधिनिरपेक्ष शुद्ध द्रव्याधिक-जो क्रमीदि स्वस्य से अलग शुद्ध स्वस्प का अन्भव करना जंसे समारी जाव को सिद्धसमान षहना । २ उत्पादः प्रयागीणत्येन समाग्राहक शुद्ध द्वव्या धिक-के, उत्पाद व्यय की गत्य ना कर सत्ता स्वरूप से षस्त् को प्रराप प्रराप तमे हा विस्थान ऐसा कर्ना । र भेद क्राय्यानिस्पेक्ष(भिन्नस्वगुणपर्यायसे अभिन्नश्रद्ध इच्य का याहर) शद इन्याधिक-जो सेद कल्पना से अभिन शुद्ध वस्तु कत्ना जिले निजगुणपर्याय से इव्य अभिन्न हे एसा कहना। ४ क्रमांपाधिमापेक्ष अज्ञाद्ध द्रव्यार्थिक जा रमागागि संयुक्त वस्तु का अनुभव करना, जैसे आतमाधी काथी मानी खादि कहना । ५ ष्टिपाद न्ययप्राधानयेन सत्ताग्राहक - अज्ञुद्ध द्रव्यार्थिक-

१ पगुरुन वृ पयाप

उत्पाद त्या से संग्क तस्य का चन्नत काना जैसे नरत् एक समय में उत्तर जन जोर प्रोज्य मे संयुक्त है, एमा करना। शिक्कतपनामापेक्ष अगुर तालांकिन्ता भेरकराना करके संयक्त पाण्य तरम् का पान्सन करना, असे 'जान वर्जनाविक पान्मा का गुला है ' लगा करता । १ अन्तर्य द्वर्णाविकन ता गुण प्यान स्व शांच करके वस्युका बाल् स्व करगर नेति तम पूर्वाप स्पतायनस्य देन है एका यहनी र अवरापादियालक राजाविक नामवयायको ही गहण कर तेला स्वरत्यादियालय का अपाता में तत्प है ल्ला वर्षा । १ वरा वादियारकः रामाविकः गौ वरत व करा वात्रता गरण का उत्तरपाट पादिन्तु भग का अपन्ता भारत तथा है गांध फहता है र र स्टब्स्यारन इ वादिन, जातनाव स्टान का राज वर भरता तेतर ता समा या सात्मा है एसा फरनी।

वक्त भी ४६ नव १ इंग्लानरण महत्त्व इस्पद्धार इन्हें १ २० १ क्वाकाविक ता स्वताहि तीर नित्तवपात इन्हें १ न १० वन र ११ वस्त ताह । १ तपात्वविन्तिन १९ इन्हें १ २ १ वर्ष र १ स्टब्स क्वाक्विक ता स्वति

करके संयुक्त है परन्त नित्य है और पर्याय पने अनु-भव करना. हैसे सिदो का पर्याय निन्य है। ह स्मनित्य-शह पर्यापाधिक- जो सत्ता को गोण करके उन्पाद व्यय स्वभाव से अनुभव करना जैसे समय समय प्रति पर्याय विनाशवान् है। ४ मत्ता सापेक्ष स्वभाव निन्याशुद्ध पर्यावाधिक- जो मना स्वभाव सयुक्त निन्य अशुद्ध पर्याय पने व्यनुभव करना जैसे एक समय में पर्याय न.नं स्वभावात्मक हे । ६ कमों राघिनिरपेक्षस्वभा-विनन्धशुद्ध पर्याणियन जो कर्म के उपाधि स्वभाव से भिरु निन्य ग्रुद्ध पर्याय पने ब्यनुभव करना, जैसे संसारी जोड के पर्याय सिद्धपर्याय के समान हाद्ध है। ई कमों गधि सापे झरदभाव व्यितन्याद्युद्ध पर्याया-थिंक- जो कमोगधि म्हभाव से संयुक्त अनिन्याशुद्ध पर्याय पने अनुभव करना, जैसे महारी जीवो की उत्पत्ति इग्रीर विनाश है।

९ सप्तभङ्गोद्वारः

भहों के नाम— १ स्यान् अस्ति, २ स्यान् नास्ति, १ स्यान् अस्ति नास्ति, ४ स्यान् अवक्तव्य, ५ स्यान्

१ इवेरम ३६० विवास उत्ताममा ६ स्मीतम् स्थाप्ति । स्थाप्ति है इन्हिम् ।

क्रावित सरकारा, है स्थात साहित स्थानकार, श्रम्यात चान्ति चान्ति चानकाच । सङ्गा के सक्षमा - १ पाने काराज्य से चर्रात चयने उत्पक्षित्र काल क्यांत्र मात की पायेका विकर सम्मायकाथि विभागति है यह भगात चारिता नाम का पारम भन्न है, जेसे जीवतामाणी रण कोर पर्यापी की समिता में क्रांगि जिल्लान सन्देश का राम जन्मा में मानेक मन जोर पर्यामा भा कार शाका कार राज्य करता, सरपास सहका कर प्रदेश । प्रस्तातिका स्टब्स्या से प्राप्त रेरार वर्गाताला स्थालनारिये नाम का दशी • • • गर्भारत्य अन्यस्य त्यार्गार्गा भवत १ वर १ रावकर सा तुला लगा (रहा १) मुच्या सर् हर रह है। अधारभाष्ट्रास है स्वात अधि * र र १३ र स्वास्ति । एट र, वार्स वापने इ हो - . . . हाना को स्ता वार वर साहि हा कर हर के देखा है जिस मार्थ मानू मार्थ म ार वर व राष्ट्र ताता सर ^३ was the true of the ar alleted CAR THER FULL FOR

करते लमय परहच्यादि को अपेक्षा से वस्तु में विध-मान (रहा हुआ नास्ति धर्म नहीं घोला जाता इस लिए वह अवकाय है। इंडमी अवकाव्यता के साथ वस्तु में अस्तिधर्म भा है इस से यह 'स्यास् अस्ति अवकाव्य' नाम का पानवा भद्द होता है। वे इसी मरह नास्तिधम भा अवकाव्यता के साथ वस्तु में हैं इस से यह 'स्यात् नास्ति अवकाव्य' नाम का छठा भद्ग होता है। अवहा अस्तिधन चौर नास्तिपन दोनो धर्म युगपत एक्साध' वस्तु में कहा नहीं जासकता इस निये अवकाय चौर कम से अस्तिनास्ति है इस से यह स्यात् अस्ति नास्ति अवकाव्य' नाम का सातवा भद्ग चीता ह

नित्य त्यांनाय पक्ष में इस प्रकार सप्तभद्गी होती है-१ स्थात नित्य, १ स्थात् अनित्य, ३ स्थात् नित्याः नित्य १ स्थात् उपवक्तत्य १ स्थात् नित्य अवक्तव्य, ६ स्थात् व्यनित्य व्यवकाव्य, १ स्थात् नित्यानित्य युगपत् उपवक्तत्य

अव एक अनेक गुरा पर्याय पक्ष में भी मसभङ्गी दिखाने हा रियान् एक निकर, स्यान् अनेक, स्यान् एक अनेकर, स्यान् अवक्तव्य, स्यान् एक अवक्तव्य, स्यान्



२ निञेप हारः

जाभाग राजा निक्त निष्यंत्र निक्तिते निरम्सेम। राभाविष न जानिका नदक्स निक्तिते नन्धाशा कत्राप्य स्व

अभे जिस जावाडि वस्तु से जिनने निकेर अपने में दा सके उनके निकेर सद से करना चाहिये। जो सद निकेश का स्वत्य न जान सके नो नाम स्थापना दन्य आर आव रिकार कि देव ना करर काने चाहिये। स्

िलेप किस का करते हा प्रमाणन प्रयोगिने सेपण निषेत हित बहुत हा प्रमाण और नम से बातु का स्थापित कर उसे तिथेर करते हा बहु त्यार प्रकार का ताल हा नाम निथेद स्थापना निलेप, स्टब्स निथेद, त्यार आद तिथेद

िनाम निषेत्-जिस पडाये से जो गुए नहीं से उस को उस नाम से करना वर नाम निसेत है। इस के बान भेड़ होते र प्रधारण्य नाम, रख्यधारण्य-नाम, ब्यौर ३ व्यथेशाना नाम (प्रधारण्य नाम-गुण-निष्यत नाम अथात जो नाम गुण कर के सहित हो, जैसे प्रमाण व्याडिस्ट इन्द्र का पद्वी के भोगने वाले



प्रतिमा का रूप, स० बहुत से बन्पाडिकों के इकहो को मान कर बनाया हत्या रूप जैसे कश्चकी, श्रक्ख-ए० चरदन के पासों का रूप. वर्कोहियों का रूप। इन काष्ट्रकम आदि दशा के विषय में आवश्यक किया पत्त साथ का एक अथवा स्मनेक, सड़ाव- काष्ट्रक-मीदिका के विषय गयाये त्याकार व्यथवा ससझाव-्चन्द्रन कोडादिका के विषय आकार रहित स्थापना भरे वह स्थापनावस्यक है। इन नाम स्थीर स्थापना में जगा विराप हा उत्तर- नाम तो यावत्कथिक अपने आश्रय हाय की त्यतिन्व क्या पर्यन्त रहते वाला जोता ह और स्थापना इत्वरा (योहे काल नक रहते बाला। ऑर यावन्यधिका , अपने आश्रय दृश्य को सनापर्यन्त रहने बाला। दोना तरह की होती है।

३ द्रव्यावर पर के हो भेद होते हि—आगमतो द्रव्यावर यक आर तोआर मतो द्रव्यावर यक । आगमतो द्रव्यावर यक न द्रस्तर व्यावर मए नि पद सिक्खित १, दिन २, जित ३ मिन ४ परिजित ४ नामसम ६, घोससम ६ ज्यासक्तर ८, अस्वक्तर ९, अव्वा-इद्यक्तर १०, अक्षाविज्य १२, अव्वा-मेलिन्य १३, परिपृष्ण १८, परिपृष्ण पोस १४, कटो ह-विष्पस्क १६, ग्रवायणोवराय १५, सेण तत्थ वाषस्याप

-		

था खोर वह कालप्राप्त होगया, उस के मृतक शरीर को भिम पर अथवा स्थारे पर लेटा हुआ देख कर किसो ने कहा कि यह इस प्रारार हारा जिनोपदिष्ट भाव से खावश्यक इस सन्त्र का अधिसामान्य प्रकार से प्रस्पता था, विशेष प्रकार से प्रस्पता था, समरत प्रकार भेटाभेद हारा प्रस्पता था तथा किया विधि हारा सम्यक प्रकार दिखलाता था जैसे शहद के चहे को तथा या के यह को देख कर कोई कहे कि यह शहद का यह। तथा या हा पहा था।

न भव्यक्षरार नाआगम से द्रव्याव्ययक — जैसे किसा आवक ये घर पर तन्त्रके का जनम हुआ उस बक्त उस का देख कर कार्ट वह कि इस लड़के की आन्मा इस प्रशास मिनवार्णदृष्ट भावद्वारा आवश्यक इस सुत्र के अध का जानकार भविष्यत काल में (आयदा) होगा, जसे नये घड़ का देख कर कोई बहे कि यह शहद का घड़ा तथा घा का घड़ा होगा।

क्षेत्र जानकशर्रार-भव्यवर्गार-तहन्त्रतिरिक्त नो स्रागः म से द्रव्यावद्यक के तान भेट होते हैं - १ लोकिक, २क्कपावचनिक और क्लोकोत्तर ब्लोकिक-जानक शर्रार-भव्यशरीर- तहत्यतिरिक्तः नोस्रागम से द्रव्यावद्यक वह है जो कोई राजेश्वर तलवर मार्डिश्वक कौटुश्विक

7

खातेहर किन्ने बारे विश्वासने से पहें ही नीधरा की पत्तमें बारें । चस्मध सम का पत्रमें बाते हैं, भिष् भिन्ना मागकर खानेबाल पार गरार पर भस्म लगाने वाले - । तार वैक का साकर बाजाविका करने वाते ३ मंग राप का तिल से बतने वाले । मि० गुनस्य उम्ने का ना करपाणकारा मानने वालेदा अस्म० यज्ञादि परे का किन्त करने इने ब्राविव विनयवाः हा ि, बिल सान्तिषदारा । जन नायसा २, सा० वान्यण प्रमाद ३ पा पालाल मार्ग में बल्ने बाले हरपाडिका कर के जन पर तमान परने पानपु ज्यान्द्रत्यमान स्वयाद्य हे न च च या है। हम के स्थान पर खाद १६२३ इंगल्या उद्याप १ सप्राप्त मानादेव के स्थान पर कि उठान जिल्हे कर सान पर द० दे-खंद्रशासे अंशत दर है। सन्दर्गण हेर के श्वाम प्रत् मार भागतेव वे सहस दर हर जारता विशेष के स्थान पर भार सदा के रहा सदा सुर दलदेव के स्थान पर अ० आया- प्रशास्त्रण इंडा ने साम यर इ० मन्तिहरू देवों के स्थानक कोट काइ जिला देवा के स्थान पर गोबर आहि में लग्ना ममाहेन जन्म सुगन्य जन छिडकमा ३२ देना ५४२ महाना गर्भ देना सुगरण

भावावदयक के दो भेद हे - { च्यागमसे भावा-वश्यक चौर २ नोच्यागम से भावावदयक !

व्यागम से भावावहयक - जिसने आवहयक इस सृत्र के स्पर्ध का ज्ञान किया हे व्योर उपयोग कर के महित है उस को आगम से भावावहयक कहते है। नोव्यागम से भावावहयक के तीन भेद होते हैं - १ लाकिक नोआगम से भावावहयक - कुप्रावचनिक नो आगम से भावावहयक ब्योर ने लाकात्तर नो ब्यागम से भावावहयक।

लाकिक नाआगम से माबाबरयक जो लोग पूर्वा-ह - प्रभान समय - उपयोग सहित भारत छोर अप-राह हुपहर पाल उपयोग सहित रामायण को बांचे तथा श्रवण कर उसका लाकिक नाज्यायम से भावा-बर्यक कहते हैं।

कुप्रावचितिकः नात्रागम से नावावद्यम-जो ये पूर्वोक्त चरकः चारिक यादत पायत मार्ग में चलने वाले प्रधावसरः " इज्ज लिहामजपान्द्रस्वनमोक्तारमाह — आहं मावातस्मगतः क्रंगति से त कुष्पावयणिञ्ज मा-षावस्मग्रं " हु० यज्ञ दिपप जलाजिल का देना ष्ठ्रायवा संध्याऽचिनसमय जलांजित का देना , प्रथवा देवी के सन्भुख हाथ जाहुना । हो ० अशिह्वन का

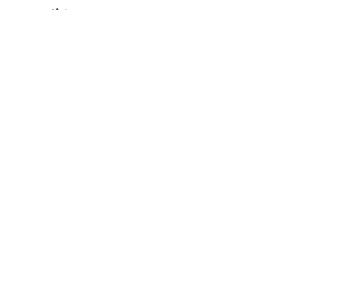
च्यावरुवक में प्रारम काल में लेकर प्रतिक्षण चढते २ प्रयत्विञीप अध्यवसाय के रखने वाले, तद्दो॰ उसी आवश्या के अर्थ के विषे उपयोग सहित अर्थात् नीवतर वैराग्य के रखने वाले, तटप्पि० उसी आव-प्रयक्त में सब इन्द्रिया (इन्द्रियों के व्यापार) को लगाने वाले. तरमा० उसा आवश्यक के विषे अन्यविचन्न उपयोग सहित अनुष्टान से उत्कष्ट भाव द्वारा परिणत एसे आवश्यक्त के परिणाम रखने वाले, अण्णत्य० उसी आवण्या, वे. सियाय ब्रान्यब्र किसा सी स्थान पर मन वचन आर कामा के योगा का न करते हुए चित्त धा एकाय रखने वाले, अना बखन उपयोग सहित भावद्यक और उसका लाकात्तर नोजागम से भावा-व्ययक कहते हैं । इति लाभात्तर नाद्र्यागम से भावा-वप्रमुकः ।

अब आवड्यक के एकाधिक नाम कहते है--

१ श्रावस्मय २ अवस्मकरणिज्ञ : धुवनिगाहो ४ विसोर्हाच।

 अउझयम तृक्ष्यमो, व नाओ ७ आसहम्मा प मम्मा ॥ १ ॥

समणेण मावण्णय, अवस्य कायव्वय हवद्र जम्हा । थता अहोनिसस्सय, तम्हा आवस्सयनाम ॥ १॥



का कारण होने से उस को आराधना कहते हैं 9। मरगो० मोझ कर नगर में पहुंचाने वाला होने से उस को मार्ग कहते हैं ८। साधु और साध्वी धावक और धाविकाओं से रात और दिन की संधि में यह स्ववस्य किया जाता है इसलिए इस को स्नावक्यक कहते हैं।

३ द्रव्यगुण-पर्याय-हार

हर्ग गुणप्यायवर्डस्यम इति (तन्वायसम इति । वननात् ना गुणा के समृह और प्याय से यक्त हा सम्बाहर्ग कहते हैं ।

गुण — 'सहभाविनागुण हिन वननान्, द्रव्य के प्रेहिस्में में आर उस का सब हालना में रहे इसको गुण कहने हा।

पर्याय- गुणविकारा प्रयाया इति बसनात् गुणो के विकार को पर्याय कहते हैं, अथवा ''कमवत्तिनः पर्याया इति बननात् जा कमसे बदलती रहे उस को पर्याय कहते हैं।

हन्य के दा भेद हन ' जाब हन्य और र अर्जाब इन्य । गुगा के अनेक भेद हे, परन्तु मुल्यतया जीब

ननन्व , २ सकियन्व ओर नौथा मिलन विखर्न रूप परनगलन गुण त । (३) कालहन्य के भी नार गुण है ९ स्मरूपिन्व , २ अनेननन्व , ३ अकियन्व और नौथा नगा पराना वसनालक्षण गुण है ।

इन से प्रत्येक का प्रयोग नार नार तीता त — श्यमितिकाय का नार प्रयोग-शिकत्य, ब्हेश, क्यदेश और श्यमित्वाय का निवास नार प्रयोग तीती ता । शिनकाय का भा ये ता नार नार प्रयोग तीती ता । शिनाय तामित नार प्रयोग- 'अन्यायाय, दिस्मवगात, क्यमिन नार अनुस्तिषु । अपुल्ल द्रत्य की नार प्रयोग- वर्ष गा वरसा यार वस्पर्ध अगुरुत्य स्वित् । वर्ष गा वरसा यार वस्पर्ध अगुरुत्य स्वित् । वर्ष गा वरसा यार वस्पर्ध अगुरुत्य स्व

पिर अन्य प्रकार से दश्य गुण प्याय के भेद कहते हिन्द पता प्यास जह प्रकार का है। गुण दा प्रकार का है सामान्य आर विशेष ।

अमर्त है, उस के भाव को अमर्त्तन्व कहते हैं।

धर्मास्तिकायादि इह इच्यों में से एक एक इच्य

में पूर्वोक्त इन दश सामान्य गुणों में के आठ आठ
गुण पाये जाते ने, जैसे - {जीव इच्य में अवेतनन्व और
मृत्तन्व ये दो गुण नहीं है, दोष आठ गुण ({अस्तिन्व,
न वस्तुन्व, दे इच्यन्व ४ प्रमेयन्व, ४ अगुरुलघु, ईप्रदेशन्व, ६ वननन्व, ८अम्बन्नव) पाये जाते है। न पुड़ल
इच्य में चेतनन्व आर अम्बन्नव ये दो गुण नहीं है,
दोष आठ गुण १ अस्तिन्व, नवस्तुन्व, इड्यन्व, ४प्रमेयन्व,
५अगुरुलघु, ६प्रदेशन्व ५ अचेतनन्व, ८म्बन्नव,) पायेजाते
है। ३०३ धर्म अधर्म आकाश और काल इन चार द्वयों में

चेनतन्द और मृत्तीन्व ये हो गुण नहीं है. शिष झाठ गुण (१ झिस्तिन्व, २ वातुन्व, ३ हत्यन्व, ४ प्रसेयन्व, ४ झगुर-तबु, ६ प्रदेशन्व, ५ झचेननन्व ८ झमर्चन्व) पाये जाते है। इस प्रकार दश गुणा में से हो हो गुण बर्ज कर होष

विद्याप गुण सोलह प्रकार का होना हे- १ ज्ञान, २ द्र्यान, ३ सुग्द, ४ दीर्थ, २ स्प्री, इंस्स, ७ गन्ध, ८ दण, ९ गतिहेतुन्द, १० स्थितिहेतुन्द, ११ स्थानाहन हेतुत्द, १ न्द्रीन गहेतुन्द, १३ सेन नन्द्र १४ स्थानेन नन्द्र, १० सुन

आह आह गुण प्रत्येक हत्य में पाये जाते हैं।

ष्टियी कारोक्ति, व्यम प्रभाष्टियो क्यथोलोक, सौर अनमस्य प्रभाष्टियो कारोलोक। तियेग्योक के जम्बू हीप कीर त्वणसहुद्ध से यावत् स्वयस्भ्रमण हीप सौर स्वयम्भ्रमण सहुद्ध तक लियने क्षमख्यात हीप समुद्ध है, उतने ही तियेग्योक के भेद ते। कर्यत्योक के परदृद्ध भेद-- 'सुपमे देवलोक से लेकर पावत् १२ वा स्वस्थुत देवलाक 'दे देश नवस्वेयक, १४ वा पांच समुत्तर विमान कोर 'चे देश हैपन्यारभाग पृथिवी से परदृह्द भेद हुए।

3 =

लिस वे गागवानुआ हा नवतवा दुरावन पर्याप हापत होता हा हमी हा नाम बाल है. इस के अनेक भेद हैं १ समार १ अ.विल्हा. ३ हरण्यास्ति। खास १ प्राण एक ब मो, ग्रावास १ में नेक (साव-प्राण , ३ लव (साव म्वोक ७ मृहले (५५ लव , प्राथवा २३० म्वोक , अथवा ३५५३ न्व मोच्छ्रवास अथवा १६५५५२१ एक करोड सहसर लाख सतह त्तर हजार दो सो सोमन आविल्वा, अथवा दो घडी , अथवा १८ मिनिटो , १ अनोगत्र ३० महत्ते अथवा २४ घटटो , ० वक्त , पत्हह सनोगत्र १० मास (दो

६ कारण-काय हार.

3

जिस के हारा कार्य सजदीक हो उसे कारय करते हैं। बर्यात् कार्य के सन को कपरा करते हैं।

ξ.

हो बुद्ध कारा प्रणास किया उस के सम्प्रयो होते से वह काय करलाना न

इन हागर कार पर हाग्रास्त करने ते. जैसे किसी पुरंप को रामाकर हीय लाना है और राग्ने में सहह साग्या उस को बैरने के जिए जनात से बैठना वह नो कारण है और रामाकर हीय पहुंचना का कार्य है।

९ निश्चय-व्यवहार द्वार

1 == 1

बातु का निज्ञावसाव - जो नी नो का ना क अवस्था में रहे - इस को निख्य करने हैं।

(JEET /

बातु की को बाध प्रवृत्ति याने झक्ला का बदलना



८ उपादान-निामित्त कारण द्वारः

जा पदा वेस्वय कायर परिमासे उस को उपादान कारण कहते ते, जाने घट का उत्पत्ति में मिटी। तथा अनादि काल में ताप में जा प्यायों का प्रवाह चला आरहा है उस में जा ज्यनस्तर प्रवेक्षणवर्ती पर्याय है वह उपादान करण है जार अनस्तर उत्तरक्षणवर्ती जो पर्याय है वह नांव है।

जो पड़ाय स्वया । विरुद्ध न परिणमे किन्तु कार्य की उन्यक्ति से स्टायकाता उस का निर्मित्त कार्या कहते हे, जैसे घट । उपनि में बुम्भकार दण्ड चक्र सादि।

डपादान कारण किएव के भार निमित्त कारण एक महाराज का जिस से ज्ञान का प्राप्ति होनी है। इस पर चीसद्वा कहते हैं -

१ निमित्त प्राप्त गार उपारान भा प्रागुत - जैसे गुरु अज्ञानी और शिष्प भा अनाना। र निमित्त ऋशुद् और उपारान शुन्- जैसे गुरु खजाना ओर शिष्प



९५ च पमर

जिस के द्वारा पदार्थ स्पष्ट जाना जावे उस को प्रत्यक्ष कहते ह । इस के दो भेद हें – इन्हिय प्रत्यक्ष और नोइन्हिय प्रत्यक्ष और नोइन्हिय प्रत्यक्ष, रचक्किरिन्हिय प्रत्यक्ष, रेघा ग्रेन्हिय प्रत्यक्ष, रेघा ग्रेन्हिय प्रत्यक्ष, रेघा ग्रेन्हिय प्रत्यक्ष, रेप्सनेन्हिय प्रत्यक्ष, और स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष, श्रेसनेन्द्रिय प्रत्यक्ष, और स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष । नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद हैं – १ अव-धिज्ञान प्रत्यक्ष, रेमन:पर्यवज्ञान प्रत्यक्ष और स्केष्क ज्ञान प्रत्यक्ष ।

२ प्रह्मान प्रमा

साधन से साध्य के ज्ञान को अनुमान कहते हैं। इस के तीन भेद हे- १पूर्ववत, न्दोषवत् और ३९छ-साधर्भवत्।

प्रवेदत् - प्रवोपलब्द विशिष्ट चिह्न हारा जो पदार्थ का ज्ञान किया जावे. उस को प्रवेदत् कहते हैं, जैसे किसी माना का पुत्र बाल्यावस्था में विदेश चला गया और वह जवान होकर पीछा अपने घर आया तो उस की माना प्रवेह्छ क्षत बण लाज्क्षन मस और तिल आदि चिह्नो हारा अपने पुत्र को पहचाने।

पहा हुन्या देख न्यमुम न करे कि यह मोनैया वही है जिसे मेने पहले दखा या।

इसी विद्याप रष्ट के सक्षेप से तीन भेद कहते हैं — ध्यतीत काल ग्रहरा, बनेमान काल ग्रहस्य और ध्यनागत काल ग्रहण '

स्तीत काल विषय हो याद्य वस्तु का परिच्छेद (ज्ञाते इसको स्तीतकाल परण कहते हैं. जैसे प्रामान्तर
जाते हुए किसी एरष ने रात्ने में तृस्य सहित भूमि
धान्य के बहुत समृह (हेंग) निपन्ने हुए, क्रण्ड सरोवर
नहीं बावडी तालाव साहि भरे हुए, और बाग बंगीचे
हरे भरे देखका अनुमान किया कि इस स्थान पर
स्तीत काल में सुवृष्टि हुई है।

जो बनेमानकालविषयक ग्रहण हा उसकी बर्च-मान काल गरण करने हैं जैसे गोवरी जाने हुए किसी मुनिराज ने व्यायन्त भाव भक्ति से प्रचुर भान पानी देने हुए बहुत दानारों को देखकर अनुमान किया कि घटा अभी बर्नमान काल में सुभिक्ष है।

जो अनागत (भविष्यत् काल विषयक बहरा हो इस को अनागत काल बहण कहते हैं। जैसे आकाश का निर्मेज पना, पर्वतों की स्थामता बिजली सहित

पहा हुआ देख अनुमान करे कि यह सोनैया वही है जिसे मेने पहले दखा आ।

इसी विरोष रुष्ट के सकेर से तीन भेर करते हैं-ध्यतीत काल पहरा बनेमान काल पहसा और ध्यनागत काल पहला !

व्यतीत काल विषय जो गाह्य वस्तु का परिच्छेद (ज्ञा-न' इसको व्यतीतकाल गएण करते हैं. जैसे ग्रामान्तर जाते हुए किसी एउप से साने में तृश्य सहित भूमि धान्य के बहुत समह (देर' निपने हुए, ज्ञुण्ड सरीवर नदी बावडी तालाब ब्राहि भरे हुए, ब्रीर बाग बंगीचे हरे भरे देखकर अनुमान किया कि इस स्थान पर व्यतीत काल में सुकृष्टि हुई है।

जो बनेमानकालविषयक प्रहण हा इसको क्ती-मान काल गरण करने हैं, जैसे गोषिंग जाने हुए किसी मुनिराज ने ज्यापना भाव भन्ति से प्रषुर भान पानी देने हुए महुन द्वानारों को देखकर अनुमान विष्या कि पहा इसभी बनीमान काल में सुभिक्ष है।

जो अनागत (सविष्यत् काट विषयक ग्रहरा हो उस को अनागत काल परण कहते हैं। जैसे आकाश का निर्मेल पना, पवेतो को ह्यामता यिजली सहित

गणधरों के एक्कर आगम नो सात्मागम हैं और अर्थरूप छागम अनन्तरागम है। तथा गणधरों के शिष्या के स्वकृतप छागम अनन्तरागम है स्पोर अर्थरूप छागम परभारागम है। इस के बाद इन के शिष्य गिष्या के स्वकृष खागम खीर खर्थरूप खागम ये दाना हा परस्तागन ह किन्तु सात्मागम और खनन्तरागम नहां है।

५ : गुणगुणी हार.

ज्ञानादि का भूग पहने ह उन ज्ञानादि गुणो को धारमा करने वाले भे भूगी पहने हैं।

११ सासान्य विशेष द्वारः

जो सक्षेप के दस्त का वर्णन किया जावे उस को सामान्य दहते हैं जार जिल के हारा वस्तुका भिन्न भिन्न कर के दिस्तार किया जावे उस को विद्योप कहते हैं। इस सामान्य दिशेष को इप्रान्त हारा स्पष्ट करते हैं, जैसे- १) सामान्य से इत्य और विशेष से इत्य केदों भेद होते ह- १ जीव इत्य और २ अजीब द्रव्य।



हतमात्रभा नारक चौर धतमात्रमात्रभा नारक । (म) सामान्य से रत्नत्रभा नारक चौर विद्येष से द्वेषकार-प्याप्त नारक चौर चारणात्र नारक। इसी प्रकार पर्याप्त स्रोर चारपीत उन दा दा सेदा से द्वेष हतो (१४) एथिविया के नारक। ये भेड जान तेना चाहिये।

(अ) संपान्य से निर्देश और विशोष से पांच पकार- १ एदेकि न जारितया ३ जान्तिया ४ चतुरि-निया योग । परिनिया। १६ सामान्य से एकेन्द्रिय बौर बिरोप से पान प्रनार - 'पृथिवानाय, र अफा-य, ३ नेज्ञाय, ्दलकार और अवस्थित काय। १८) सामाना ले प्राप्तकाय और विशेष से हो प्रकार- ीत नगुर २००१ व व व एर १८ सामान्य से सहर इप २५ भ्योप से बादबार १ पर्याप्त स्वाप्त राजासाय गार र कापर्याप्त सक्ष्म पृथ्वी-काष। 🔑 🙃 सामान्य से पालर पृथ्वीकाय और विशेष से जा उम्ह । अयोह महार प्रावण्याय और र् अपर्याष्ट्र बाहर हा सहाय । इस्य प्रकार (२२) अर प्हाप, (२५ वेडः १५) बायुकाय और (३१) बनस्पनिकाय दे सेट जार देवे।

र सामान्य से शिन्दिय और दिशेष से दो









चार भेद होते ति १ हानि गान २ राह यान ३ धनित्यान और ४ शृह यान १ इन चारी ते त्यानी की विद्योप वर्णन सगपती सन्न उपपार्ड राज ह्यादि अवेक ग्रन्थों से जान लेना चालिये

अय प्रकारास्तर से त्यान के चार सेंद्र करते हैं-१ पद्मध-ध्यान, २ पिण्यस्य-त्यान, ३ सप्यय-त्यान और ४ सपानीत-त्यान।

१पटम्थ-ध्यान— ग्रिक्टिनादि हपांच परमेष्ठियों के गुणों का स्मरण कर के चित्र में उन का व्यान करना उस को पटम्य स्वान कहते हैं।

न पिण्डम्य-भ्यान— पिण्डचाने अपने शरीर में रही हुई अपनी खात्मा में क्रियत्त निद्ध आवार्य उपाध्याय खौर साधु के गुणा की जित्तवना करना, ख्रधवा गुणी के गुणी में उपयोग की एकता करना उस को पिग्डम्य ध्यान कहते हैं।

इस्प्रथन त्यान — जो सप में रहा हुआ भी मेरा जीव अस्पी और अनन्तर्णी ह ऐसी चिन्तवना करना, तथा जो वस्तु का स्वस्त अतिराधावलस्वी होने पाद आत्मा के सप की एउता चिन्तवना उस की स्प्रथ ध्यान कहते हैं। इन तीनो ध्यानो का समावेश पूर्वोक्त धमन्ध्यान में होता है।

चाराद्वादि कालिक छुत अयीत सामु मुनिराज का पच महाबत आएक वे बारत बत. अगार अमे ओर अगगार अमे आदि का जो त्यान हो उस को चरण करणानुयोग करते । इस अनुयोग में नीति की प्रधानता ह। इस का कल प्रमाद की निबुत्ति और अप्रमाद की प्राप्ति ह।।

२ वमक्या (प्रथमा) नुप्रांग- आख्यायिकावचन-जो ऋषिमापित शास्त्र- जातावमक्रयात ग्राहि, ग्रोंग ग्रन्थ- त्रिपष्टिगलाका पुरुष चरित्र तथा मोज गामी जीवो का भृत भविष्यत बलेमान काल सम्बन्धी बर्गान हो उम को भमेल्यानुष्योग कहते है। इम ग्राह्म योग में अलङ्कार शास्त्र की प्रयानता है। इम का फल विषय कण्य की निवृत्ति और उपशम बैराग्य की प्राप्ति है।।

३ गणिता (काला) नुयोग- मन्याजास्त्रवचन-जो सृयमज्ञित खादि सच तथा नरक तियेश्च मनुष्य और देवों के सुख दृःख खबगातना आयुष्य खादि की वर्णन हो, खथवा छीप समुद्र खादि तीन लोक (स्वर्ण-मन्य पाताल) का वर्णन हो, जथवा गाद्वेय भद्ग खादि भद्ग जाल का वर्णन हो उस को गणितानुयोग कहते है। इस अनुयोग में परिक्रमाष्टक (गणित शास्त्र) की प्रधानता है। इस का फल चित्तव्ययना की निवृत्ति और चित्त की एकायन। नी प्राप्ति है।

४ द्रव्यानुयोग- हिष्टिबाद वचन- जो पह द्रव्य का विचार . सात नय, नव पदार्थ, पञ्चास्तिकाय और प्रमाण स्पादि निक्षय नया का क्थन हे उस को द्रव्या-नुयोग कहते हैं। इस में न्याय शास्त्र की प्रधानता है। इस का फल स्वाबादि दापा की निवृत्ति और सम्यक्त्य की निर्मलिता की प्राप्ति है।

२१ जागरणा (३) हार

जागरणा – निद्रा के क्षय ताने पर जा जागृत होता अर्थात जागता उस का जागरणा वहते हैं। इस के तीन भेद हैं – १ धर्म जागरणा, २ अर्थम जागरणा और १ कुट्रम्य जागरणा।

१ धर्म जागरणा- धर्म चिन्तन के लिए जागना उस को धर्म जागरणा बहते है। इस के तीन भेद हैं १ बुद्ध जागरणा, २ झाबुद्ध जागरणा छ। र हे सुदक्ष जागरणा। १ बुद्ध जागरणा - जो छारिहन्त भगवान, उत्पत्त हुआ केवलज्ञान छोर केवल दर्शन को धारण करने वाले धायन सब भाव को जानने दाले तथा सन पदार्थ को देखने वाले और दूर हुई है झाझान रूप

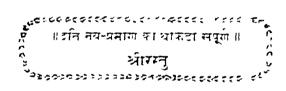


1,21

पंच परमेष्ट्री को नम्नं, रहुं जिन छाजा लाल । श्रीजिनवर्म प्रसाद से, वरते मंगल माल ॥ई॥

आन्तम महत्त्रम -

ब्राद्धां चन्द्नयालिका भगवता राजीमता होपदी, कोशत्या च मृगावती चसुलमासीता च सहा सती। कुरती कीलवती नलम्य द्यिता चुला प्रभायत्यीप पद्मावत्यपिसुन्दरी दिनम्खेक्देन्त् वो मद्गलम। १॥



Printed at the Sethia Jun Print no press BIKANER 20-1-28 June